स्टीबिया की व्यवसायिक खेती एवं औषधीय उपयोगिता

राहुल कुमार, नागेन्द्र कुमार* एवं अमृता कुमारी
पादप रोग विभाग, राजेन्द्र कृषि विष्ठवविद्यालय, पूसा (समस्तीपुर)

स्टीबिया 70–80 से. मी. ऊँचा बहुवर्षीय एवं बहुशाकीय पौधा है, जो अपनी मिठास के लिए काफी लोकप्रिय है। यही कारण है कि स्टीबिया को चीनी तुलसी या मधुपत्र नामों से भी जाना जाता है। स्टीबिया की पत्तियों में मिठास उत्पन्न करने वाले तत्व– स्टीबियोसाइड एवं ग्लूकोसाइड पाये जाते हैं। इनके अलावा इनमें कई और तत्व पाये जाते हैं जिनमें इंसुलिन को संतुलित करने वाला गुण होता है। इसकी मिठास टेबल शुगर से ढ़ाई सौ गुना एवं सुक्रोस से तीन सौ गुना अधिक होती है। इनका मनुष्य के ऊपर किसी तरह का विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता है। गन्ना और चुकंदर लम्बे समय से शक्कर प्राप्ति का एक प्रमुख स्रोत है। हाँलाकि इन दोनों ही स्रोतों से प्राप्त शक्कर में मिठास का गुण तो होता है किन्तु साथ ही उच्च कैलोरी भी इसमें पायी जाती है जिसके परिणामस्वरूप यह मधुमेह रोगी को हानि पहुँचाती है। जबकि स्टीबिया से तैयार की गई चीनी में मिठास तो होती है परन्तु मधुमेह रोगी को हानि नहीं करती है। इस प्रकार स्टीबिया से प्राप्त शक्कर एक बेहतर विकल्प हो सकती है।

रोपण का समय : स्टीबिया के लिए सबसे अनुकूल समय फरवरी–मार्च होता है। लेकिन इसके अलावा पूरे वर्ष भी इसकी खेती की जाती है।

उन्नत प्रजातियाँ : स्टीबिया की कुछ उन्नत प्रजातियाँ हैं जैसे–एम.बी.आर.–512, एम.बी.आर.–123 एवं एम. बी.आर.–128 इत्यादि।

जलवायु : स्टीबिया को 20–41^0 सें. तापक्रम पर आसानी से उगाया जा सकता है। अर्द्ध तथा अर्द्धउष्ण किस्म की जलवायु इसकी खेती के लिए सबसे अच्छी मानी जाती है।

मिट्टी : स्टीबिया की खेती के लिए रेतीली दोमट मिट्टी सर्वोत्तम मानी जाती है। जल निकासी की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए क्योंकि जल जमाव पौधों को नुकसान करता है। अतः इस बात का ध्यान खेत चुनाव करते समय अवश्य रखना चाहिए।

खेत की तैयारी : पौधे की रोपाई से पूर्व 3–4 गहरी जुताई करनी चाहिए तथा अन्तिम जुताई से पहले 5–10 टन/हे. सड़ी हुई गोबर की खाद एवं कम्पोस्ट खेत में डालकर अच्छी प्रकार से मिला देना चाहिए तथा पाटा लगा देना चाहिए।

बीज द्वारा रोपाई : बीजों को पौधशाला में अक्टूबर तथा फरवरी महीने में बुआई करके पौधा तैयार किया जाता है।

कलम द्वारा : स्टीबिया की 3–5 इंच लम्बी कलमों को रेत में फरवरी–मार्च तथा जुलाई–सितम्बर के महीनों में लगाकर तैयार किया जाता है।

रोपण विधि : इनके पौधों को समतल खेत में या बेड पर दोनों विधियों से लगाया जा सकता है। बेड की चौड़ाई 60 सें.मी. तथा ऊँचाई 12–15 सें.मी. रखनी चाहिए। इस बेड पर पौधों को 40 से.मी. की दूरी पर बनी पंक्तियों में 20–25 से.मी. पर लगाना चाहिए।

खाद एवं उर्वरकः– जुताई के समय 5–10 टन/हे. की दर से सड़ी हुई गोबर की खाद डालनी चाहिए। इसके अलावा नाइट्रोजन, फॉस्फोरस एवं पोटाश की पूर्ति के लिए (250:100:100) किलोग्राम मात्रा को कार्बनिक स्त्रोतों के माध्यम से देना चाहिए। इसके लिए

* कीट विज्ञान विभाग, राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा (समस्तीपुर)

वर्मीकम्पोस्ट, नीम की खली एवं हड्डी के चूर्ण का खाद प्रयोग किया जा सकता है।

निराई–गुड़ाई : स्टीबिया के फसल में 4–6 बार समय–समय पर निराई–गुड़ाई करते रहना चाहिए, जिससे वृद्धि अच्छी होती है।

सिंचाई : फसल में सदैव नमी बनी रहनी चाहिए, क्योंकि यह पौधा सूखा सहन नहीं कर पाता है। विशेषकर गर्मी में 3–4 बार सिंचाई महीने में करना आवश्यक हो जाता है। परन्तु जल जमाव की स्थिति नहीं होनी चाहिए।

रोग : कभी–काल स्टीबिया के पौधा पर काला धब्बा नाम रोग का प्रकोप पाया जाता है। इसके नियंत्रण के लिए 25 ग्राम डाइथेन एम. 45 तथा डाइथेन एम. 78 का छिड़काव करना चाहिए।

फसल कटाई : इसकी पहली कटाई पौधा रोपण के लगभग चार माह बाद की जाती है। इस प्रकार वर्ष में 3–4 कटाई की जा सकती हैं। एक बार रोपी गई फसल तीन वर्षों तक चलती रहती है। इसके बाद पत्तियों में स्टीबियोसाइड की मात्रा घटने लगती है। काटते समय पौधों को भूमि की सतह से 6–8 से.मी. ऊपर से काटना चाहिए। ज्यादा पत्तियाँ प्राप्त करने के लिए पौधों पर फूल आते ही उनको तोड़ते रहना चाहिए।

उपज :– स्टीबिया के पौधे से वर्ष भर में 100–110 क्विं./हे. सूखे पत्ते प्राप्त किये जा सकते हैं।

औषधीय गुण : स्टीविया में निम्नलिखित औषधीय गुण पाये जाते हैं :

- ❑ स्टीबिया के शक्कर में कैलोरी नहीं पाई जाती है। जिसके फलस्वरूप यह मधुमेह रोगी को दिया जा सकता है।
- ❑ स्टीबिया का प्रयोग करने से रक्तचाप तथा मधुमेह नियंत्रित होता है।
- ❑ यह अग्नाशय को अधिक मात्रा में इन्सूलिन पैदा करने के लिए प्रेरित करता है।
- ❑ स्टीबिया का प्रयोग चर्म रोगों में भी राहत प्रदान करता है।
- ❑ इसके प्रयोग करने से दाँतों एवं मसूढ़ों में होने वाले विकारों से भी छुट्टी मिलती है।
- ❑ स्टीबिया की पत्तियों में स्टीबियोसाइड, ग्लूकोसाइड एवं रीवाउदिसाइड नामक तत्वों के होने के कारण इसे औषधी के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

❑ ❑ ❑

इस पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार, तथ्य, आंकड़ों के लिए लेखक उत्तरदायी हैं। उससे प्रकाशक/सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।